अंतरा-शब्दशक्ति

आपकी ही परछाई

काव्य संग्रह

केवरा यदु "मीरा"

आपकी ही परछाई

(काव्य संग्रह)

केंवरा यदु "मीरा"

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-39-1

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अण्डाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © केंवरा यदु "मीरा"

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Aapki hi Parchai' by 'kevra Yadu Meera'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत :प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

आपकी ही परछाई

वर्तमान समय में विसंगतियों का दौर है। जो आज बदलते वक्त के साथ हमारी संवेदनाओं को पंगु बना रहा है। आज आये दिन होते अवाँछनीय धटनाओं से मन व्यथित हो उठता है जिसे आँसू भी नहीं खतम कर पाते। ऐसे में एक संवेदनशील ह्रदय अपनी कलम की लेखनी का सहारा लेकर अपने अंतरभावों को शब्दों में ढ़ाल सृजन का रूप देता है।

मैने भी यही कोशिश की है संसार की आधी आबादी नारी शक्ति होती है। परन्तु हम देखते आ रहे हैं कि सदियों से नारी शोषण का शिकार होती आई है आज तो और भी वीभत्स रूप देखने को मिलता है। कहीं कन्या भ्रूण हत्या , प्रति दिन बलात्कार की घटना ,दहेज प्रकरण, तलाक, घरेलू हिंसा , और न जाने क्या क्या?

मेरी सभी रचनाएँ नारीवादी ही है बिटिया के जनम ,शादी में बिटिया की विदाई, माँ की वेदना, माँ के रूप में आदि शक्ति माँ भवानी का वंदन सभी नारी पर रचनाएँ है। कहीं माँ की जुदाई कहीं मनमोहन से गुहार कहीं नारी शक्ति को जगाती विभिन्न भावों से भरे शब्दों के फूल आप सबको समर्पित करती हूँ।

हर जगह नारी ही सृष्टि का आधार है हम चाहे कितना भी उपेक्षा करें पर नारी की अस्मिता के बगैर संसार का संचालन संभव नहीं। मैने अपनी इन्हीं भावों को व्यक्त करने की कोशिश की है। नारी की परछाई तो हर सृजन में परोक्ष अपरोक्ष रूप में है। आशा है मेरी रचनाएँ आप सभी को ह्रदय गाह्म होगी ।

इसी आशा के साथ आप सभी की सखी।

केंवरा यदु "मीरा"

अनुक्रमणिका

1. स्वर्णिम कल	5
2. दुर्गा का अवतार	6
3. तान फिर सुना दे	7
4. नैनन नीर बहाये	8
5. काश मैं पंछी होती	9
6. आ जाओ कान्हा एक बार	10
7. माँ मैं आपकी बेटी	11
8. बेटी बचाओ-1	12
9. बेटी बचाओ-2	13
10.माँ की ममता	14
11.नारी	15
12.मेरी लाड़ली तू ससुराल में	16

स्वर्णिम कल

बेटी मैं सुपरम्पराओं से आँगन महकाने आई हूँ।
अखिल विश्व धरा पर पहचान बनाने आई हूँ।

आई मैं आँगन में जब महक उठा घर बार।
पैगाम प्यार का मैं लाई कहने लगी बयार।
ममता की आँचल को मैं महकाने आई हूँ। अखिल विश्व धरा--

मैं किरण हूँ खुशियों की गूँजे आँगन किलकारी।
फूलों की मैं खुसबू हूँ महके बगिया सारी।
दोनों कुल की आँगन स्वर्ग बनाने आई हूँ। अखिल विश्व धरा---

छोटी सी बिटिया आँगन में आई अभी अभी।
बेटी होती है पराई यह कहना नहीं कभी।
सृष्टि की श्रृंगार हूँ मैं धरा हरसाने आई हूँ। अखिल विश्व धरा----

बेटी बन स्नेह धार से सिंचित करती आई।
बहना बन भइया की प्यारी राखी बनी कलाई।
तिरस्कृत न होऊँ कहीं स्वर्णिम कल लाई हूँ। अखिल विश्व धरा---

अपनों के लिये समर्पित मैं अपनों के लिए ही मरती हूँ।
शिव सी विष पीकर मैं स्नेह का रंग भरती हूँ।
मर्यादा की डोर हूँ सुविचार बहाने आई हूँ। अखिल विश्व धरा--

सरहदों की जाकर दुश्मनों से टकरा सकती हूँ।
मेंहदी वाली हाथों में मैं भी बंदूक उठा सकती हूँ।
नाम शहीदों में लिखा बेटी का मान बढाने आई हूँ। अखिल विश्व धरा--

बेटियों पर जुल्म न हो न जले दहेज़ की बलि बेदी पर।
मजबूर न हो बेटियाँ आ जायेगी दुर्गा चण्डी बनकर।
नारी शक्ति हूँ सुख शान्ति का प्रकाश फैलाने आई हूँ। अखिल विश्व धरा-

दुर्गा का अवतार

सुनो बेटियों भारत माता तुम को रही पुकार।
माँ भारती का सुन्दर सपना तुम्हीं करो साकार।

तू जननी तू बहना तू बेटी बन आना।
मात पिता के आँगन को स्वर्ग तुम बनाना।
बेटी तू ईश्वर का दिया है अनुपम उपहार। माँ भारती का सुन्दर--

आने से तेरे आँगन झूमे महके फुलवा डारी।
झूला झूलती आज बेटियाँ कल को तारण हारी।
मात पिता का दर्द समझती पोंछे अँसुवन धार।। माँ भारती का सुन्दर---

ममता जग से रूठ जायेगी जो बेटी न आयेगी।
बेटे ही बेटे होंगे स्नेह धार कौन बहायेगी।
बेटी तू तो दोनों कुल की होती है पतवार।। माँ भारती का सुन्दर---

कोख में बेटी को मारोगे पाप से न बच पाओगे।
तड़पोगे स्नेह को तुम बहुत बहुत पछताओगे।
बेटियाँ लक्ष्मी सरस्वती है दुर्गा का अवतार। माँ भारती का सुन्दर---

तान फिर सुना दे

वो धुन कहाँ से पाऊँ मुरली बजाने वाले।
हो जाये मनवा पागल वो तान फिर सुनादे।

मै बावरी सी ड़ोलूं बैठूं कदंब की छैंया।
रो रो तुझे पुकारूँ कब आओगे कन्हैया।
तुम खो गये कहाँ पे राधा को यूँ भुलाके। वो धुन कहाँ-

आँखे भी थक गई है अब इंतजार करके।
आजाओ हे कन्हैया मथुरा से फिर निकल के।
चित को चुराने वाले आके गले लगाले। वो धुन कहाँ से-

नेहा लगा कान्हा क्यूँ हो गये पराये।
आवन को कह गये थे क्यूँ अब तलक न आये।
कैसी ये प्रीत तेरी आके जरा बतादे। वो धुन कहाँ से-

पूनम की रात कान्हा तूने रास थे रचाये।
और वो कदंब की छैया झूला भी थे झुलाये।
कैसे तुझे भुलाऊँ कोई रास्ता बता दे। वो धुन कहाँ से-

वो धुन कहाँ से पाऊँ मुरली बजाने वाले।
प्राणों में जो बसे हैं वो आज फिर सुनादे ।

नैनन नीर बहाये

सावन आये तुम न आये नैनन नीर बहाये।
कट जाये नयनों में रतिया बिजुरी बहुत डराये।
सजन अब आ जाओ सजन अब आ जाओ।

सावन की रूत आई सुहानी याद पिया तेरी आये।
बरखा की बूँदें तन मन में और भी अगन लगाये।
तुम तो बसे परदेश पिया क्या याद न मेरी आये।। सजन अब आ जाओ-

निश दिन तेरी बाट निहारूं कजरा गजरा लगाके।
आवोगे पिय मेरे अँगना मन को रखूं समझा के।
तुम न आये आई बरखा कजरा बह बह जाये।। सजन अब आ जाओ---

साज सिंगार मोहे अब न भाये क्यूँ मेरी सुधि बिसराये।
पायल घायल रो रो पुकारे गेसू खुल खुल जाये।
पिहू पिहू की रटन लगा कर कोयल संग संग गाये। सजन अब आ जाओ-

सजन अब आ जाओ सजन अब आ जाओ ।
सावन आये तुम न आये नैनन नीर बहाये।

काश मैं पंछी होती

काश मैं पंछी होती उड़ती दूर गगन में।
और चहकते हुए जा बैठती किसी चमन में।।

उड़ उड़ कर देखा करती नदिया झील समंदर।
एक टक निहारा करती झरनों का वह झर झर।
कुदरत का नूर समाया है इनके ही झरन में।
काश मैं पंछी होती उड़ती दूर गगन में।

पंख पसारे उड़ती मैं भी पवन के संग फर फर।
चाहत होती उड़ कर छू लूं नीले नीले अंबर।
कितना मजा आता साथियों के संग उड़न में।।
काश मैं पंछी होती उड़ती दूर गगन में।

ऊंच नीच का भेद ना होता मिलजुल कर हम रहते।
एक ड़ाल पर बैठ सभी मिलकर कलरव करते।
इन्सानो को यह बतलाते कुटिलता नहीं है मन में।
काश मैं पंछी होती उड़ती दूर गगन में।

जग की कोलाहल से बचकर रहती दूर ही दूर।
ना रहती झंझट में किसी का होकर के मजबूर।
दूषित धूल धुआँ ना रहते मेरी जहन में।
काश मैं पंछी होती उड़ती दूर गगन में।

और चहकते हुए जा बैठती किसी चमन में।

आ जाओ कान्हा एक बार

आ जाओ कान्हा एक बार,
आ जाओ कान्हा एक बार,
राधा रो रो पुकारे तोहे सांवरे।

तेरे मिलन की आस लगाये तुझे ढूंढ रही है,
गिरती है बावरी सी गोकुल की गलियों में ढूंढ रही है।
आ जाओ मेरे प्राणा धार।
राधा रो रो पुकारे तोहे सांवरे । आ जाओ कान्हा एक बार---

नयनों से नीर बरसे ओ गिरधारी चाह में तेरी,
रूठी है निंदिया चैनो करार कान्हा चाह में तेरी,
देख तो आकर एक बार।
राधा रो रो पुकारे तोहे सांवरे। आ जाओ कान्हा एक बार--

कब आओगे मेरे कन्हाई बस इतना बतादो,
तड़प रही हूँ मैं तेरी राधा श्याम यूं ना सजा दो,
आ गले से लगा लो एक बार।
राधा रो रो पुकारे तोहे सांवरे। आ जाओ कान्हा एक बार--
राधा रो रो पुकारे तोहे सांवरे। आ जाओ कान्हा एक बार---

माँ मैं आपकी बेटी

माँ मैं आपकी बेटी हूँ मुझे कोख में पलने दो,
आपकी ही परछाई हूँ आँचर में मुझको चलने दो।

पढ़ लिख कर मैं भी माँ बेटी का मान बढ़ाऊंगी,
आपके आदर्शों पर कुल शान बढ़ाऊँगी।
बोझ नहीं बनूंगी माँ जिंदगी मुझे भी गढ़ने दो।।

हत्या मत करवाना पापा भारत भू पर आना चाहूँ,
राम कृष्ण की धरती को मैं भी शीश झुकाना चाहूँ।
सीता सावित्री झाँसी की रानी बनकर मुझको बढ़ने दो ।।

कल्पना चावला सी बनूंगी जग में रौशन नाम करूँगी,
हर ऊंचाई छू लूंगी माँ नहीं हाथ में हाथ धरूँगी।
माँ बेटी बहन बनूंगी राखी हाथ में सजने दो।।

मैं ना जन्मूंगी घर आपके द्वार बारात नाआयेगी,
पापा से फिर माँ आप कैसे कन्या दान कराओगी।
डोली सजेगी धूम मचेगी शहनाई भी बजने दो। ।

मैं नहीं रहूँगी माँ फिर मेहंदी कौन रचायेगी,
दीपावली दशहरा में रंगोली कौन सजायेगी।
माँ मैं तेरी आशा हूँ मुझे प्यार दे पलने दो ।।

माँ मैं आपकी बेटी हूँ मुझे कोख में पलने दो।
आपकी ही परछाई हूँ आँचल में मुझको चलने दो।।

बेटी बचाओ-1

जूही चम्पा चमेली होती है बेटियाँ।
गंगा की निर्मल नीर सी,होती है बेटियाँ
मीरा तुलसी कबीर सी,होती है बेटियाँ।

मंदिर की घंटियां है,कुरान है मस्जिद की।
गुरुद्वारे की गुरूवाणी होती है बेटियाँ।
मीरा तुलसी कबीर सी..

गीता के श्लोक रामायण की चौपाईयां।
कबीर की दोहे सी,होती है बेटियाँ।
मीरा तुलसी कबीर सी...

बेटियाँ नहीं तो सूना,सारा जहाँ।
माँ बहन राखियां सी होती है बेटियाँ।
मीरा तुलसी कबीर सी..

राम कृष्ण गौतम गांधी,कहां से है।
सृजन की देवी नारी होती है बेटियाँ।
मीरा तुलसी कबीर सी...

बेटी तुलसी की बिरवा फूलों की महक है।
जूही चम्पा चमेली,होती है बेटियाँ।
मीरा तुलसी कबीर सी...

बेटी बचाओ-2

गंगा की निर्मल नीर सी होती है बेटियाँ।।
मीरा तुलसी कबीर सी, होती है बेटियाँ।

सीता सावित्री से,समझो न इसे कम.
आसमां को छू रही है आज कल की बेटियाँ। मीरा तुलसी कबीर सी ...

राखी तीज करवा चौथ,रस्म बेटियों से है।
माथे की चंदन,अबीर सी होती है बेटियाँ। मीरा तुलसी कबीर सी...

रौशन करेगा बेटा बस एक ही कुल को।
दोनो कुलों के दर्द पे ,रोती है बेटियाँ। मीरा तुलसी कबीर सी....

आँगन में कन्या दान होती है जिस घड़ी।
आँखों को माँ बाबुल की,भिगोती है बेटियाँ।मीरा तुलसी कबीर सी..

पायल की रूनझुन से,गूँजे माँ का आंगना।
आँगन की लक्छमी,सरस्वती होती है बेटियाँ। मीरा तुलसी कबीर सी..

ना रोको बेटियों को आने से जहाँ में।
हम सब की तकदीर सी, होती है बेटियाँ। मीरा तुलसी कबीर सी,..

माँ की ममता

माँ की ममता का इस जग में मोल नहीं।
तौल सके इस ममता को,वह बना आज तक तौल नही।

रख नौ मास कोख में सुत को,सौ सौ जतन किया।
प्रसव वेदना सही असनिय,पुत्र को जनम दिया।
उस जननी के लिए कभी कडवे बचन तू बोल नही।। तौल सके इस.....

जागी रातों में माँ ने पलकों में,तुझे बिठाया।
खुद गीले में सोकर के तुझे,सुख की नींद सुलाया।
उस माँ की अमिमय आंखों में,आँसू कभी तू घोल नही।। तौल सके इस...

हुआ कभी कष्ट सुत को,मां व्याकुल हो जाती।
देवी देव मनाया करती,झर झर अश्रू बहाती।
उस माँ की ममता को कभी,अंहकार से तौल नही।। तौल सके इस.....

अपनी रक्त को दूध बनाकर,माँ ने तुझे पिलाया।
खुद भूखी रह अपना निवाला,माँ ने तुझे खिलाया।
माँ शब्द से बढ़कर.,जग में दूजा कोई बोल नहीं।। तौल सके इस....

घूप छाँव से तुझे बचाया,फूल बिछाये राहों में।
धूल धूसरित था तब भी,तुझे उठाया बाँहों में।
उस रहबर की राहों में,आने देना शूल नही।। तौल सके इस....

पहली बार मुँह खोला तब तू,माँ शब्द ही बोला।
उँगली पकड़ माँ बाप चलाते,जब जब था तू ड़ोला।
ईश्वर भी माँ को नमन करे,इस बात को तू भूल नहीं।। तौल सके इस....

नारी

अपनी प्रतिभा के बल पर नारी दूर झितिज तक झा रही।
तूफानों से टकरा कर आगे ही आगे बढती जा रही।

अब ना कोई रोके इनको और ना कोई टोंके।
मन में अटल विश्वास संजोये अब तो रहेगा होके।
पैरों की अब बेडी टूटी अपनी तकदीर जगा रही। तूफानों से,,,,

तरह तरह के नियम कायदे बनते हैं नारी के लिये,
आरक्षण में भेदभाव पलते हैं नारी के लिये।
चारो ओर अब अपने नाम की डंका आज बजा रही। तूफानों से,,,,

सायना की खेल प्रतिभा सुनीता विलियम्स की उडान,
किरण बेदी की पुलिस प्रशासन सानिया की अलग पहचान।
पर्वतों की उत्तुंग शिखर पर अपना परचम लहरा रही। तूफानों से,,,,

मुश्किल में जीना सिखलाये नारी की कोमल भावनाऐं,
हो घडी हौसलों की चट्टानों से भी टकराऐं,
अपने ही कौशल से शासन चला इंदिरा बनती जा रही। तूफानों से,,,,

इस धरती से दूर गगन तक ममता का प्यारा आंचल,
गैरों को अपना कर पोंछे आंखों का आंसू छल छल,
दुख दर्द में हाथ बढ़ा मदर टेरेसा बनती जा रही। तूफानों से,,,,

घर बाहर की जिम्मेदारी नारी अब तेरी बारी,,,
मेंहदी वाली हाथों में अब बंदूक थामने की तैयारी,
वीरांगनाओ में नाम हो झाँसी वाली रानी बनने जा रही। तूफानों से,,,,

मेरी लाड़ली तू ससुराल में

मेरी लाड़ली तू ससुराल रहना शान बनके।
अपने पिया के दिल रहना जान बनके।

पापा की तू लाड़ली बिटिया माँ को प्राण से प्यारी।
भाई बहन की प्यारी बहना ओ मेरी राज दुलारी।
माथे की तेरी बिंदिया चमके चाँद बनके।। मेरी लाड़ली तू-----

नाजों से तुझे पाला मैंने बाँहों का झूला बनाके।
माँ की आँख की तू पुतली पलकों में रखा छुपाके।
ससुराल में तुम रहना बिटियाँ अरमान बनके।। मेरी लाड़ली तू------

बाबुल का आँगन छूट रहा ससुराल है अब घर तेरा।
खुशियां बरसे उस आँगन में साँझ और सबेरा।
तू महके उस आँगन में गुलाब बनके।। मेरी लाड़ली तू -----

मात पिता है सास ससुर अब पाना प्यार वहाँ।
वाणी से अमृत बरसाना जाना जहाँ जहाँ।
दोनों कुल की रहना बिटिया आन बनके।। मेरी लाड़ली तू-----

अमर सुहाग रहे तेरी जब तक गंगा जमुन की धारा।
बिंदिया चमके जब तकजग में सूरज चाँद सितारा।
कँगना तेरी खनके गीता गान बनके।। मेरी लाड़ली तू----

तीज करवा चौथ मनाना राखी में आ जाना।
भाईयों की कलाई बहना कभी नहीं तरसाना।
भईया की तू प्यारी बहना रहना वहाँ वरदान बनके ।। मेरी लाड़ली तू----

चुटकी भर सिंदूर से बिटिया रिस्तों की बारात है।
सात फेरों और सात वचन से सौ जन्मों का साथ है।
सीता सावित्री सी बन रहना अलग पहचान बनके।। मेरी लाड़ली तू----

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती केवरा यदु 'मीरा'
जन्म - 25.08.1954, पोखरा ग्राम (राजिम)
पति - श्री हुबलाल जी यदु
पता - राजिम रेस्ट हाऊस के पास, पोस्ट- थाना राजिम
जिला गरियाबंद (छ.ग.)
मो.नं. - 8889681095
शिक्षा - विद्यालय के अभाव में शिक्षा अधुरी।
विधा - गीत, गजल, भजन, हाइकु, पिरामिड साइली
प्रकाशित 1. भजन संग्रह (श्री राजिव लोचन भजनांजली) 1997।
2. सुन ले जिया के मोर बात (छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह) 2015
3. सत्ती चालीसा 2016, देवी भज 2016, होली गीत 2017, देवी भजन भाग 2-2017।
प्रकाशाधिन - मितानिन गीत- 3 (जड़ी बूटी से उपचार), भजन संग्रह, सत्य घटनाओं पर आधारित काव्य 'नारी की व्यथा' महिला हिंसा पर , तीरथ बरत (छत्तीसगढ़ी)
उपलब्धियां - विगत 30 वर्षो से लेखन कार्य, स्थानीय कवि गोष्ठियों सम्मेलनों में 10 वर्षो से पाठ, राजिम कुंभ में कविता पाठ व भजन गायन कार्यक्रम में सम्मिलित। 16 वर्षो से भ्रूण हत्या, महिला हिंसा के लिए मितानिन कार्यक्रम से जुड़ी हूँ। सखी सेंटर की मदद से महिलाओं के अधिकार दिलाने एवं घर बिखरने से बचाने के लिए कार्य में संलग्न।
अध्यक्षा- कस्तुरबा महिला मंडल, महासचिव - यदु समाज में महिला प्रकोष्ठ,
उपाध्यक्षा - मितानिन संगठन में ब्लाक स्तर पर।
सम्मान 1. राजभाषा आयोग से 5 वर्षो से लगातार सम्मान 2. सुरज कुंवर देवी सम्मान 3. राजिम कुंभ में प्रति वर्ष सम्मान 4. मितानिन सम्मेलन में भ्रुण हत्या रोकथाम हेतु सम्मान, 5. त्रिवेणी संगम साहित्य सम्मान 6. सुंदरलाल शर्मा सम्मान 7. हाइकु पर- अर्णव कलश सम्मान 8. सभी विधा में भाग लेने पर अर्णव कलश सम्मान। 9. फणीश्वर नाथ अलंकार सम्मान और अनेकों सम्मान से सम्मानित।
संबध्द - त्रिवेणी संगम साहित्य, राजिम।
उल्लेखनिय - गरीबों की सहायता, समाजसेवा, किशोरी बालिकाओं को बचाव हेतु शिक्षा।
विशेष रुचि - सिलाई, कढ़ाई, बागवानी, पठन - पाठन।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
978-93-88102-39-1
मूल्य 40/-
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com